उद्योग, उद्योगवाद और औद्योगीकरण

व्यावसायिक क्रियाओं (Commercial Activities) को दो भागों में बाँटा जाता है –

(i) उद्योग सम्बन्धी क्रियाएँ (Industrial Activities)
(ii) वाणिज्य सम्बन्धी क्रियाएँ (Commercial Activities)

जो क्रियाएँ वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन से सम्बन्ध रखती हैं, उन्हें उद्योग सम्बन्धी क्रियाएँ कहते हैं। इसके विपरीत उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई वस्तुओं के वितरण (distribution) से सम्बन्धित क्रियाएँ जैसे – व्यापार, विज्ञापन प्रचार, बैंक, परिवहन तथा बीमा सेवाएँ आदि को वाणिज्य सम्बन्धी क्रियाएँ कहते हैं।

उद्योग का अर्थ (Meaning of Industry) :–

उद्योग व्यावसायिक क्रिया का वह अंग है, जिसमें वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। इन उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुओं का उपयोग या तो उपभोक्ता प्रत्यक्ष रूप से खुद कर लेता है या अन्य उद्योग अपने उत्पादन में करते हैं। जिन निर्मित वस्तुओं का उपभोक्ता प्रत्यक्ष रूप से उपयोग करते हैं उन वस्तुओं को उपभोक्ता पदार्थ (Consumer Goods) कहते हैं और जिन निर्मित वस्तुओं का उपयोग अन्य उद्योग अपने उत्पादन में करते हैं उन्हें पूँजीगत पदार्थ (Capital Goods) कहते हैं। कुछ उद्योग ऐसे पदार्थों का उत्पादन करते हैं जो न तो उत्पादक पदार्थ हैं और न ही इनका उपभोक्ता द्वारा सीधा उपभोग किया जा सकता है बल्कि उन्हें अन्तिम रूप दूसरे उद्योगों में प्राप्त होता है, जैसे कुछ उद्योग प्लास्टिक या एल्यूमीनियम का उत्पादन करते हैं लेकिन उनको उपभोग करने योग्य रूप दूसरे उद्योगों में दिया जाता है। इन पदार्थों को मध्यवर्ती पदार्थ (Intermediate Goods) कहते हैं।

उद्योग शब्द का प्रयोग संकुचित और विस्तृत दोनों ही अर्थों में किया जाता है। संकुचित अर्थ में (In a Narrow Sense) – उपलब्ध प्राकृतिक कच्चे पदार्थों से उत्पादक वस्तुओं तथा उपभोक्ता वस्तुओं का निर्माण करना 'उद्योग' कहलाता है।

विस्तृत अर्थ में (In Broader Sense) उद्योग के अन्तर्गत प्राकृतिक उद्योग, खनन उद्योग, निर्माण उद्योग और रचनात्मक उद्योग भी आ जाते हैं, लेकिन Economics में उद्योग में केवल खनन, निर्माण और विज्ञान उद्योगों को ही सम्मिलित किया जाता है।

Scanned with CamScanner

सामान्य रूप से उद्योग चार प्रकार के होते हैं-

(i) प्राकृतिक उद्योग (Genetic Industry) :-

कृषि, वन और मत्स्य उद्योग आदि इसके अन्तर्गत आते हैं। इस वर्ग में मुख्यत: वे उद्योग आते हैं जिनमें प्रत्यक्ष रूप से प्राकृतिक साधनों का विदोहन करके मनुष्य के जीवन के किसी आवश्यक व आधार भूत वस्तु का उत्पादन किया जाता है।

(ii) खनन उद्योग (Extractive Industry) :-

समुद्र और भूमि में से पदार्थों को निकालना खनन उद्योग कहलाता है। उद्योग के लिए आवश्यक कच्चे पदार्थ खनन से ही मिलते हैं।

(iii) निर्माण उद्योग (Manufacturing Industry) :-

कच्चे पदार्थों का रूप परिवर्तित कर वस्तुओं का निर्माण करना निर्माण उद्योग के अन्तर्गत आता है। इस वर्ग में जूट, शक्कर, लोहा व इस्पात, कपड़ा उद्योग आदि आते हैं।

(iv) रचनात्मक उद्योग (Construction Industry) :-

इसके अन्तर्गत पुल, बाँध, भवन और सड़कों आदि का निर्माण आता है।

उद्योग की परिभाषा (Definition of Industry) :-

"उद्योग ऐसी प्रक्रियाओं का सामूहिक रूप होता है जिनके द्वारा अनिर्मित पदार्थों को बेचने के योग्य बनाया जाता है। इस प्रक्रिया (Process) में तीन प्रकार के प्रमुख कार्य होते हैं - किसी पदार्थ को प्राकृतिक अवस्था से निकालना, उसका स्वरूप बदल कर वस्तुओं का निर्माण करना और फिर जिन लोगों को उसकी जरूरत हो, उन तक पहुँचाने की व्यवस्था करना।" —

F. J. Wright

"सामान्य अर्थ के अनुसार उद्योग से आर्थ निर्माण से है तथा कृषि, खनिज और अधिकांश सेवाएँ इसके अन्तर्गत आते हैं।" —

Sargant Florence

Scanned with CamScanner

" जब हम किसी भी उद्योग की बात करते हैं तो हमारा आशय उन फर्मों या व्यावसायिक संस्थाओं (Business Organisations) से होता है जो किसी विशेष प्रकार का उत्पादन कार्य करती हैं, जिनके कार्य उन विशेष उत्पादित वस्तुओं और उनके बनाने में लगी सामग्रियों पर निर्भर करते हैं।" ——
Mrs. Joan Robinson

उद्योगवाद (Industrialism) :—

बड़े पैमाने पर उत्पादन करने को उद्योगवाद कहते हैं, जिससे घरेलू उत्पादन प्रणाली (Domestic Production System) के स्थान पर आधुनिक कारखाना प्रणाली (Modern Factory System) की स्थापना होती है।

इस प्रकार, उद्योगवाद उद्योग पर आधारित व्यवस्था को कहते हैं जिसमें दो तत्व (factor) काम करते हैं — (i) आधुनिक आविष्कारों से निर्मित उपकरण और यंत्र और (ii) इनके प्रयोग पर आधारित औद्योगिकी।

उद्योगवाद की विशेषताएँ (Characteristics of Industrialism) :—

1. उद्योगवाद एक व्यवस्था का द्योतक है।
2. उद्योगवाद कारखानों या factories को आधुनिक स्तर पर स्थापित करने और विकसित करने से सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत नई तकनीक, समय बचाने वाले उपकरण या मशीनें तथा लाभ बढ़ाने वाले यंत्र शामिल हैं।
3. उद्योगवाद में विभिन्न प्रकार के आर्थिक-व्यापारिक संगठन, बाजार तथा उद्योग से सम्बन्धित अन्य व्यवस्थायें शामिल होती हैं।
4. उद्योगवाद की व्यवहार प्रणाली कृषि व्यवस्था की व्यवहार प्रणाली से भिन्न है।
5. उद्योगवाद से समाज में एक नई विचारधारा का जन्म होता है।

Scanned with CamScanner

औद्योगीकरण (Industrialisation) :-

सामान्यतः 'औद्योगीकरण' शब्द को दो अर्थों में प्रयोग किया जाता है - संकुचित अर्थ में और व्यापक अर्थ में। संकुचित अर्थ में (In Narrow Sense), औद्योगीकरण से अर्थ निर्माणी एवं आधार भूत उद्योगों की स्थापना एवं विकास से है जिसका मुख्य उद्देश्य उत्पादन के साधनों की कुशलता और क्षमता में वृद्धि करके सामान्य जीवन-स्तर में वृद्धि करना है। जबकि, व्यापक अर्थ में (In Broader Sense), औद्योगीकरण के अन्तर्गत केवल निर्माणकारी आधारभूत उद्योगों की स्थापना ही नहीं की जाती है बल्कि इसके माध्यम से देश की सम्पूर्ण आर्थिक संरचना में परिवर्तन किया जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था के विकास से सम्बन्धित समस्त घटकों का समान रूप से विकास करना होता है।

अतः औद्योगीकरण बहुमुखी आर्थिक विकास की व्यापक प्रक्रिया है।

" औद्योगीकरण से अभिप्राय आर्थिक वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में अमानवीय शक्ति के स्रोतों का अत्यधिक प्रयोग है।" —

W.E. Moore

" औद्योगीकरण का प्रत्यक्ष सम्बन्ध उत्पादकता से है और दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। जहां औद्योगीकरण के कारण उत्पादन की दर तथा माला प्रभावित होती है, वहीं पर अधिक उत्पादन स्वयं औद्योगीकरण की प्रक्रिया को तेज करता है।" —

Gunnar Myrdal

औद्योगीकरण की विशेषताएँ (Characteristics of Industrialisation) :-

1. औद्योगीकरण आर्थिक विकास का पर्यायवाची है (Industrialisation and Economic Development are Synonymous) :-

औद्योगीकरण में आर्थिक विकास की व्यापक प्रक्रिया का विचार शामिल है। इसमें निर्माणी उद्योगों की स्थापना एवं विकास के साथ-साथ कृषि का विकास, व्यापार और परिवहन की समृद्धि यंत्रीकरण आदि को भी शामिल किया जाता है।

Scanned with CamScanner

2. पूँजी का गहन एवं विस्तृत प्रयोग (Deepening and Widening Use of Capital) :-

औद्योगीकरण पूँजी का गहन और विस्तृत प्रयोग करने की प्रक्रिया है। औद्योगीकरण से प्रति इकाई उत्पादन लागत में कमी आती है और उपक्रमों के लाभों में वृद्धि होती है जिससे प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है और बचत तथा पूँजी निर्माण को प्रोत्साहन मिलता है और औद्योगीकरण में वृद्धि होती है।

3. नवीन प्रक्रियाओं का विकास (Development of New Process) :-

औद्योगीकरण से उत्पादन व्यवस्था में नवीन प्रक्रिया का जन्म होता है, जैसे- मशीनीकरण, स्वचालन, विवेकीकरण, वैज्ञानिक प्रबन्ध, नये बाज़ारों का विकास, नई-नई वस्तुओं का उत्पादन आदि।

4. स्वयं स्फूर्ति अवस्था से सम्बन्ध (Related With Take-off Stage) :-

औद्योगीकरण का सम्बन्ध आर्थिक विकास (Economic Development) की तीसरी अवस्था अर्थात् स्वयं स्फूर्ति अवस्था से है। आर्थिक विकास की प्रारम्भिक अवस्था में अर्थव्यवस्था का स्वरूप कृषि प्रधान होता है। आर्थिक विकास की दूसरी अवस्था में कुछ उद्योगों का विकास शुरू हो जाता है लेकिन Take-off stage आते ही औद्योगीकरण की प्रक्रिया तेज हो जाती है।

5. श्रम की गतिशीलता (Mobility of Labour) :-

औद्योगीकरण श्रम की Mobility को बढ़ा देता है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ होते ही श्रम कृषि क्षेत्र से हटकर उद्योगों की ओर प्रवाहित होने लगता है, क्योंकि उद्योगों में श्रम की आय अधिक होती है। श्रम की आय में वृद्धि होने से उसकी उत्पादकता में भी वृद्धि हो जाती है। इस प्रकार श्रम की गतिशीलता एवं विशिष्टीकरण औद्योगिक विकास का सूचक है।

Scanned with CamScanner

6. सामाजिक परिवर्तन (Social Change) :-

औद्योगीकरण की प्रक्रिया में समाज परम्परावादी दृष्टिकोण से हटकर आधुनिक एवं गतिशील दृष्टिकोण अपनाने लगता है जिससे समाज में लोगों का शैक्षिक स्तर विकसित होता है। रहन-सहन का स्तर बदलता है और जातिवाद के बन्धन कम होते जाते हैं।

Scanned with CamScanner